'' खाद्यान्नों की मांग को लेकर होता कृषि विकास''

डॉ0 सुरेन्द्र चौधरी
सहायक आचार्य भूगोल
राजकीय कन्या महाविद्यालय नोहर

रामनिवास कस्वां
शोधार्थी, विभाग
बीकानेर विश्वविद्यालय बीकानेर।

प्रस्तावित शोध की प्रस्तावना

ग्रामीण वित्त की आवश्यकता भारत के ग्रामीण गरीब अपनी आय के प्राथमिक स्रोत के रूप में कृषि पर अत्यधिक निर्भर हैं, बहुसंख्यक सीमांत या छोटे किसान हैं, और गरीब जोत भूमिहीन हैं। भारत के ग्रामीण गरीबों की वित्तीय जरूरतें इन परिवारों की अस्थिर, अनिश्चित और अनियमित आय धाराओं और व्यय पैटर्न को दर्शाती हैं। 2003 का हाल ही में पूरा हुआ विश्व बैंक–एनसीएईआर ग्रामीण वित्त पहुंच सर्वेक्षण (अब से आरएफएएस 2003 के रूप में संदर्भित)। इंगित करता है कि ग्रामीण परिवार मुख्य रूप से बहु–आय वाले परिवार हैं, उनकी आय के दो मुख्य स्रोतों में कृषि उत्पादों की बिक्री और मजदूरी श्रम शामिल हैं। अनियमित रोजगार मजदूरी से होने वाली आय का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत है। आय के एक से अधिक स्रोत वाले परिवारों के लिए, कृषि आय सबसे महत्वपूर्ण द्वितीयक स्रोत है, जिसमें कृषि उपज और डेयरी उत्पादों की बिक्री सबसे प्रमुख है। स्पष्ट रूप से, ग्रामीण परिवार एक या दोनों प्रकार की आय पर निर्भर करते हैं। मौसमी (फसल के बाद की बिक्री) या अत्यधिक अनियमित, अनियमित या अंशकालिक मजदूरी श्रम के कारण, बाद वाले पर निर्भरता भूमि जोत के आकार के विपरीत आनुपातिक है।

परिवारों की विशिष्ट व्यय प्रोफाइल भी महीने भर में किए गए छोटे, दैनिक या अनियमित खर्चों की होती है। इसके अलावा, ग्रामीण परिवारों का भारी बहुमत हर साल कम से कम एक असामान्य खर्च से निपटने की रिपोर्ट करता है, जिसे वे नकद घर से या परिवार, दोस्तों या साहूकारों से अनौपचारिक ऋण के माध्यम से वित्तपोषित करने के लिए मजबूर होते हैं, अनुसंधान से पता चलता है कि गरीब लोग महत्व देते हैं वित्तीय सेवाएं और चाहते हैं कि ये विश्वसनीय, सुविधाजनक, निरंतर और लचीली हों। वे समझते हैं कि वित्तीय सेवाएं उन्हें एक समय में अर्जित आय को खर्च करने में मदद करती हैं। क्योंकि वे आय छोटी, अनियमित और अविश्वसनीय होती हैं, उन्हें मध्यवर्ती तरीकों के पूर्ण शस्त्रागार की आवश्यकता होती है–भविष्य के खर्च के लिए बचत करना, भविष्य की बचत के खिलाफ अग्रिम लेना, और नकदी भंडार का निर्माण करना जिसे किसी भी समय बुलाया जा सकता है। गरीबों को वित्तीय सेवाओं की एक विस्तृत श्रृंखला की आवश्यकता होती है–छोटे अग्रिमों से लेकर उपभोग की जरूरतों को पूरा करने के लिए निवेश के उद्देश्यों के लिए ऋण से लेकर दीर्घकालिक बचत तक जो उन्हें जीवन–चक्र की जरूरतों को प्रबंधित करने में मदद करते हैं।

प्रस्तावित शोध के सोपान

कृषि में आधुनिकीकरण जैसी अवधारणा भारत में स्वतंत्रता के उपरान्त दिखाई देती है। इससे पहले भारत विदेशी शक्तियों के अधीन रहा है उन्होंने कृषि विकास एवं आधुनिकीकरण के लिए अधिक प्रयास नहीं किये थे।

भारत में जैसे–जैसे जनसंख्या वृद्धि बढ़ी है वैसे ही खाद्यान्नों की मांग में भी वृद्धि हुई है। अतः लोगो की तीव्र दर से बढ़ती मांग की पूर्ति के लिए अतिरिक्त उत्पादन आवश्यक हो जाता है और इस अतिरिक्त उत्पादन के लिए कृषि का आधुनिकीकरण आवश्यक होता है। कृषि में आधुनिकीकरण की विचारधारा का समावेश उपर्युक्त विचारधारा का ही प्रतिफल है। कृषि में आधुनिकीकरण के लिए उसमें नई तकनीकी, मशीनीकरण, रासायनिक उर्वरक, नई किस्म के उन्नत बीज एवं विभिन्न कीटनाशक औषधियॉ कृषि में प्रयुक्त की जाने लगी, जिससे कृषि के क्षेत्र में नये परिवर्तन हुए एवं कृषि उत्पादन भी प्रभावित होने लगा। अतः कृषि के आधुनिकीकरण का तात्पर्य कृषि कार्यो में विभिन्न वैज्ञानिक तकनीकियों के सम्रग उपयोग से है। भारत एक कृषि प्रधान देश है। कृषि इसकी अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार है। आज भी दो तिहाई जनसंख्या की जीविका कृषि पर निर्भर है। अधिकांश उद्योगों को कच्चा माल कृषि से प्राप्त होता है। कृषि आधारित इन उद्योगों का राष्ट्रीय आय में भारी योगदान रहता है। तथा इनमें बडी संख्या में लोगों को रोजगार देने की क्षमता है। सम्पूर्ण भारत के समान राजस्थान की अर्थव्यवस्था भी मूलतः कृषि पर आधारित है। प्रदेश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का लगभग 50 प्रतिशत भाग कृषि के उपयोग में आता है। यद्यपि अन्य राज्यों की तुलना में यहाँ कृषि की आदर्श दशाएं उपलब्ध नहीं है। किन्तु प्रतिकूल एवं विविधता युक्त भौगोलिक परिस्थितियों में भी राज्य में कृषि का पर्याप्त विकास हुआ है। राज्य की कृषि यहाँ की जलवायु द्वारा नियन्त्रित होती है। यहाँ की जलवायु में विविधता पायी जाती है। जलवायु की इस विविधता का प्रभाव भूमि उपयोग कृषि उपजों के स्वरुप एवं उत्पादकता पर प्रत्यक्ष रुप से पड़ता है।

प्रस्तावित शोध का महत्व

प्रस्तुत अध्ययन की मुख्य उपयोगिता यह होगी की जिले की कृषि योजनाओं में संलग्न व्यक्तियों व संस्थाओ को जिले में वर्तमान कृषि विकास का स्तर ज्ञात होगा। जिससे कृषि को नूतन आयाम मिलेगें व राष्ट्रीय महत्व बढ़ेगा। जिले के भावी कृषि विकास हेतु उपयुक्त योजना का निर्धारण कर सके और संसाधनो का समुचित उपयोग करते हुये लोक कल्याण की ओर अग्रसर हो सके।

शोध प्रबन्ध में प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर जिले के कृषि विकास के क्षेत्र में शोधकर्ता, सामाजिक कार्यकर्ता एवं कृषि विकास कार्यो से सम्बन्धित विभिन्न समस्याओं पर लाभप्रद कदम उठा सकें।

कुछ विद्वानों का मानना है कि मनुष्य कृषि कार्य पाषाण युग से ही करता आया है। देश की जनसंख्या का अधिकांश भाग कृषि कार्य में संलग्न है। हमारे देश में अधिकांश उद्योग कृषि जनित, उत्पादों पर ही प्रतिस्थापित है। भोजन की प्राप्ति कृषि की प्रधान क्रिया है।[1] कृषि की दृष्टि से भारत एक महत्त्वपूर्ण देश है। इसकी दो–तिहाई जनसंख्या कृषि कार्यों में संलग्न है। कृषि एक प्राथमिक क्रिया है जो हमारे लिए अधिकांश खाद्यान्न उत्पन्न करती है। खाद्यान्नों के अतिरिक्त यह विभिन्न उद्योगों के लिए कच्चा माल भी पैदा करती है। इसके अतिरक्ति, वुफछ उत्पादों जैसे – चाय, कॉपफी, मसाले इत्यादि का भी निर्यात किया जाता है।

कृषि जीवन जीने का एक ढंग रहा है तथा यह जन समुदाय की जीविका की एक मात्र सबसे महत्त्वपूर्ण साधन बनी हुई है। स्वतंत्रता से ही भारतीय कृषि की प्रक्रियाओं एवं प्रवृत्तियों को प्रभावित करने में सरकार द्वारा निर्मित कृषि संबंधी विशिष्ट रणनीतियों एवं नीतियों की भूमिका अत्यधिक महत्त्वपूर्ण थी।

प्रस्तावित शोध के उद्देश्य

1. कृषि में आधुनिकीकरण स्थापित करने वाले कारकों की पहचान कर उनके प्रभावों का विश्लेषण करना।
2. क्षेत्र विशेष में इन कारकों के व्यक्तिगत प्रभावों एवं समुच्चय के रूप में सम्मिलित प्रभावों का अध्ययन करना।
3. सांख्यिकी विधियों के उपयोग द्वारा अध्ययन क्षेत्र में स्थित प्रत्येक तहसील हेतु कृषि आधुनिकीकरण सूचकांको का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. जनसंख्या के अनुरूप कृषि उत्पादन का आंकलन।
5. कृषि भूमि उपयोग एवं उत्पादन वृद्धि में सम्बन्धों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।

प्रस्तावित शोध का निष्कर्ष

वर्षा आधारित क्षेत्र पर पर्याप्त ध्यान केंद्रित करके कृषि उत्पादकता में वृद्धि करना, भारतीय कृषि का मात्र फसली कृषि से पशुपालन, मत्स्य पालन, मुर्गी पालन एवं बागवानी की ओर विविधीकरण के साथ पर्यावरण संबंधी चिंताएँ कृषीय क्षेत्र की केंद्र बिंदु होनी चाहिए। विनियोग के अपेक्षाकृत अधिक स्तर केवल कृषि की उत्पादकता में वृद्धि करने के लिए ही नहीं बल्कि परिवहन, भंडारण एवं कृषि उपज के वितरण के लिए पर्याप्त आधारभूत ढाँचे के लिए भी आवश्यकता होती है। भारतीय कृषि का निरंतर मंद कार्य संपादन एक चिंता का स्रोत रहा है। लोगों के मस्तिष्क में सबसे महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह है कि भारतीय कृषि में अगला भेदन क्या और कहाँ होगा?

सुधार की पूर्ण कमी तथा विनियोग की न्यूवता उन अनेक तत्त्वों में से सबसे महत्त्वपूर्ण बने हुए हैं जिन्होंने विशेष रूप से 1990 के दशक के बाद कृषि वृद्धि को मंद कर रखा है। कृषि पदार्थों की निरंतर बढ़ती हुई आवश्यकताओं को पूरा करने में विपणन संबंधी एवं अन्य सुधार आवश्यक हैं तथा मानवीय एवं पर्यावरण संबंधी तत्त्वों द्वारा प्रस्तुत चुनौतियों का सामना करने हेतु कृषि को तैयार करने के लिए विपणन संबंधी एवं अन्य सुधार आवश्यक हैं। कृषि बाजारों का आधुनिकीकरण एवं उन्हें अत्यावश्यक सहयोगी आधारभूत ढाँचे एवं संस्थाओं से जोड़ने की भी तुरंत आवश्यकता है।

कृषि आधुनिकीकरण परंपरागत कृषि से आधुनिक कृषि परिवर्तन की प्रक्रिया और साधन को मापा जाता है। इस प्रक्रिया में, आधुनिक कृषि उद्योग, आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी और कृषि के समकालीन दुनिया उन्नत स्तर में पिछड़े परंपरागत कृषि में वृद्धि से आर्थिक आधुनिक प्रबंधन के तरीकों, ताकि कृषि उत्पादकता के साथ सशस्त्र के बढ़ते प्रयोग. इस परिवर्तन की प्रक्रिया को प्राप्त कृषि का आधुनिकीकरण कहा जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

सिहाग, एम.एस. एवं (2011) : इंदिरा गाँधी नहर : सतत् विकास सिंहाग, सविता (गौतम बुक कम्पनी, राजापार्क, जयपुर)
कात्यायन, अरूण (2010) : कृषि विज्ञान के मूलभूत सिद्धान्त (किताब) महल, इलाहाबाद)
सिहाग, एम.एस. एवं (2011) : रिसोर्स ज्योग्रोफी (गौतम बुक कम्पनी, सिहाग, सविता राजापार्क, जयपुर।
ओझा, बी.एल. (2009) : भारतीय अर्थव्यवस्था (रमेश बुक डिपो, जयपुर)
अग्रवाल,एन.एल.(2009) : भारतीय कृषि का अर्थतन्त्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।